बेहोश करने की क्रिया को एनस्थेशिया कहते हैं। यह ग्रीक भाषा का शब्द है। ग्रीक में 'एन' का अर्थ 'नहीं' व 'एस्थीशिया' का अर्थ होता है 'महसूस करना' यानी एनेस्थीशिया का अर्थ हुआ महसूस न करना या सुन्न होना'। मगर *डॉ. नरेश पुरोहित* बता रहे हैं कि.....

एनेस्थीशिया सिर्फ बेहोश करना भर नहीं है

डॉ.नरेश पुरोहित

यह गलतफहमी काफी आम है कि शल्यक्रिया से पहले क्लोरोफॉर्म सुंघाकर मरीज़ों को बेहोश किया जाता है और इसके बाद ही शरीर की चीर-फाड़ की जाती है। वास्तविकता यह है कि क्लोरोफॉर्म के खतरों की वजह से उसका उपयोग पूरी तरह से बन्द हो चुका है। ऑपरेशन से पहले मरीज़ को बेहोश करने या उसके अंग विशेष को सुन्न करने के लिए अब आधुनिक दवाइयों का प्रयोग किया जाता है। इस काम को विशेष रूप से प्रशिक्षित चिकित्सक ही अंजाम देते हैं, जिन्हें एनेस्थेटिस्ट कहते हैं।

एनेस्थेटिस्ट का मुख्य काम शल्यक्रिया से पहले मरीज़ को बेहोश करना होता है। लेकिन उसके ज़िम्मे यह इकलौता काम नहीं है। विष सेवन, मस्तिष्क की चोट तथा ऐसे दूसरे रोग जिनमें कृत्रिम सांस की ज़रूरत पड़ती हो, वहां भी एनेस्थेटिस्ट की ज़रूरत पड़ती है। इसके अलावा दर्द से राहत दिलाने में भी उसकी ज़रूरत पड़ सकती है। बेहोश करने की क्रिया को एनस्थेशिया कहते हैं। यह ग्रीक भाषा का शब्द है। ग्रीक में 'एन' का अर्थ 'नहीं' व 'एस्थीशिया' का अर्थ होता है 'महसूस करना' यानी एनेस्थीशिया का अर्थ हुआ 'महसूस न करना या सुन्न होना'।

एनेस्थीशिया में कभी-कभी काफी शक्तिशाली दवाइयों का इस्तेमाल होता है जिससे मरीज़ अर्द्धमृत सा हो जाता है। शरीर के कमज़ोर अंगों पर इसका काफी बुरा असर पड़ता है। ज़रा-सी असावधानी से मरीज़ की जान जा सकती है।

एनेस्थेटिस्ट का काम शल्यक्रिया से काफी पहले शुरू हो जाता है। शल्यक्रिया से पहले एनेस्थेटिस्ट अन्य विशेषज्ञों की सहायता से मरीज़ की जांच करवाता है। मरीज़ का पूर्व इतिहास जानकर उसका रक्तचाप, मूत्र व रक्त की जांच की जाती है।

जनरल एनेस्थीशिया के बतौर इस्तेमाल की जाने वाली दवाएं

किस्म	क्रिया	उदाहरण
इलाज से पहले दी जाने वाली दवाएं	मरीज़ को सामान्य बनाती हैं, दर्द से राहत दिलाती हैं, लार व बलगम की मात्रा को कम करती हैं।	डाइज़ीपाम, मॉर्फिन, अल्ट्रापिन
इंजेक्शन के द्वारा दी जाने वाली दवाएं	मरीज़ को अचेत बना देती हैं।	थायोपेण्टॉन सोडियम
एनेस्थीटिक गैसें	मरीज़ को अचेत बना देती हैं या अचेतावस्था को बरकरार रखती हैं।	आइसोफ्लूरॉन, नाइट्रस ऑक्साइड, एनफ्लूरॉन, हैलोथेन
एनाल्जेसिक	दर्द मिटाती हैं	मॉर्फिन, फेण्टानिल
मांसपेशीय दर्द-निवारक	मांसपेशियों को शिथिल करती हैं।	पैनक्योनियम, वेक्यूरोनियम

ज़रूरी समझे जाने पर एक्स-रे, ई.सी.जी., अल्ट्रासाउण्ड, आई.वी.पी.सी.टी., स्कैन, एम.आर.आई., थायरॉएड फंक्शन टेस्ट, लिवर फंक्शन टेस्ट आदि किए जाते हैं। चेकअप में कोई रोग पाए जाने पर पहले उसका उपचार किया जाता है। उपचार के बाद एक बार फिर चेकअप किया जाता है। और फिट पाए जाने पर फिटनेस सर्टिफिकेट दिया जाता है।

एनेस्थीशिया देने से पहले यह जानना इसलिए भी ज़रूरी है क्योंकि कई रोगों में एनेस्थीशिया नुकसान पहुंचाता है। मरीज़ को एनीमिया, डायबिटीज़, गुर्दे की परेशानी, रक्तचाप, हृदयरोग, यकृत की खराबी, दांत या हड्डियों में दर्द आदि हो तो एनेस्थेटिस्ट को परेशानी हो सकती है।

एनेस्थीशिया कई प्रकार के होते हैं, और अलग-अलग रोगों को ध्यान में रखकर दिए जाते हैं। कुछ रोगों में हर तरह का एनेस्थीशिया नुकसानदायक होता है। जैसे रक्तचाप को ही लें। यदि कम रक्तचाप के मरीज़ को एनेस्थीशिया दिया जाए तो उसका रक्तचाप और कम हो जाता है। इससे मरीज़ शल्यक्रिया टेबल पर ही मायोकॉर्डियल दौरे का शिकार हो सकता है। इसी तरह उच्च रक्तचाप का मरीज़, रक्तचाप और ज़्यादा होने के कारण दिमाग की नसें फटने से कोमा में जा सकता है। इसी प्रकार दमा में सांस लेने में कठिनाई हो सकती है।

एनेस्थीशिया के प्रकार

जनरल एनेस्थीशिया: जनरल एनेस्थीशिया में एक तयशुदा वक्त के लिए मरीज़ को पूरी तरह बेहोश किया जाता है। एनेस्थीशिया का इंजेक्शन देने से एक दिन पहले मरीज़ के खानपान पर ध्यान देना पड़ता है। शल्यक्रिया की पूर्वसंध्या पर मरीज़ को हल्का भोजन कराना चाहिए। रात में कुछ भी खाना-पीना नहीं चाहिए। शल्यक्रिया से कम से कम छह घण्टे पहले तो कुछ भी नहीं पीना चाहिए। पानी की एक बूंद भी नुकसान पहुंचा सकती है। ऐसा इसलिए कि आम तौर पर लोगों की श्वास नली में कुछ नहीं जाता। कभी कुछ चला भी जाए तो खांसने से निकल जाता है। लेकिन बेहोशी में मरीज़ खांस नहीं सकता। इसलिए आहार नली में वमन या किसी अन्य कारण से श्वास नली में कुछ चला जाए तो काफी परेशानी हो सकती है।

शल्यक्रिया से पूर्व तनाव व

लोकल एनेस्थेशिया

दवा	प्रमुख उपयोग	किस तरह ली जाती है
अमेथोकीन	आंखों की शल्य चिकित्सा के लिए, दांतों के उपचार के दौरान होने वाले दर्द से राहत के लिए	आई ड्रॉप्स, स्प्रे, क्रीम इत्यादि
बन्ज़ोकीन	मुंह एवं गले की दर्दकारक समस्याओं के इलाज के लिए, बवासीर	सपोसिटरीज़* के रूप में
ब्यूपिवाकीन	नसों में रुकावट पैदा करने के लिए	टीका
कोकीन	नाक, गले व स्वरकोष की शल्य चिकित्सा के लिए	आई ड्रॉप्स, स्प्रे व द्रव रूप में
लिग्नोकीन	दांतों के उपचार के दौरान दर्द से राहत पाने के लिए, रीढ़ की हड्डी में एनेस्थीशिया देने के लिए, नसों में रुकावट पैदा करने के लिए, आंखों की शल्य चिकित्सा	इंजेक्शन, जेल, स्प्रे, क्रीम, मलहम, द्रव आई डॉप्स व सपोसिटरीज़* के रूप में
प्रोकेन	शल्य चिकित्सा व दांतों के इलाज के दौरान दर्द से बचने के लिए	इंजेक्शन

सपोसिटरीज़ - शरीर के किसी स्वाभाविक द्वार जैसे मलद्वार, योनी से अन्दर डाली जाने वाली, आसानी से पिघल जाने वाली दवा*